Rohtas Mahila College, Sasaram. 28-07-20
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A. part I H Pr-I
2019-20

(Topic - चिंतन तथा भाषा)

चिंतन में भाषा की भूमिका के सम्बंध में शुरू से ही विवाद रहा है। एक विचार यह रहा है कि चिंतन के लिए भाषा न केवल सहायक है, बल्कि आवश्यक भी। इस विचार के समर्थकों के अनुसार भाषा के अभाव में चिंतन सम्भव नहीं है। दूसरा विचार यह है कि चिंतन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। इस विचार के समर्थकों के अनुसार भाषा के अभाव में भी चिंतन सम्भव है। इस संदर्भ में (Watson, 1914) ने कहा है कि चिंतन के लिए भाषा आवश्यक है। उन्होंने यह भी कहा है कि भाषा और चिंतन में कोई मौलिक भेद नहीं है। उनके अनुसार भाषा के आन्तरिक रूप को ही चिंतन कहते हैं। उन्होंने चिंतन को अव्यक्त भाषण, अन्तः भाषण (Inner speech) की संज्ञा दी। उन्होंने बच्चों के चिंतन की चर्चा करते हुए कहा है कि छोटे बच्चे गणित के प्रश्नों का समाधान करते समय अपनी अंगुलियों पर बोलते बोलते रहते हैं। परन्तु वही बच्चे बड़े होने पर मन ही मन बोल-बोल अपनी समस्या का समाधान करते हैं। ब्रेन (Braine, 1963) ने भी चिंतन में भाषा के महत्व को स्वीकार किया है। उनके अनुसार भाषा नियमों का प्रभाव चिंतन पर पड़ता है, भाषा नियमों का ज्ञान चिंतन को सरल बना देता है। इसी तरह वयस्कों में अमूर्त चिंतन के लिए उपयुक्त एवं पर्याप्त शब्द भंडार तथा व्याकरण के नियमों के व्यवहार की योग्यता आवश्यक है। स्पष्टतः अमूर्त चिंतन बहुत अंशों में भाषा पर आधारित है।

दूसरी ओर मनोवैज्ञानिकों की एक बड़ी संख्या वाटसन

Scanned with CamScanner

के विचार से सहमत है। अब इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चिंतन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। उनका कहना है कि चिंतन तथा भाषा का विकास स्वतंत्र रूप से होता है। अतः चिंतन के लिए भाषा सहायक हो सकती है, आवश्यक नहीं।

ब्राउन (Brown, 1965) के अनुसार भाषा व्यक्ति के चिंतन में सहायक है, परन्तु भाषा के बिना भी चिंतन संभव है।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि चिंतन एवं समस्या समाधान में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा से चिंतन में सहायता मिलती है और समस्या का समाधान आसान बन जाता है। यह भी स्पष्ट हुआ कि चिंतन तथा भाषा अभिन्न नहीं है और भाषा के अभाव में भी चिंतन संभव है।

Scanned with CamScanner